बाइबल टीचर

वर्ष 17 दिसम्बर 2019 अंक 1

सम्पादकीय

मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं हूं

यीशु ने अपने चेलों से बातचीत करते हुए कहा था कि ''मार्ग, सच्चाई और जीवन में ही हूं।'' (यूहन्ना 14:6)। यह तीनों बातें हमें प्रभु यीशु में मिलती है। यीशु ने कहा था कि ''बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर पिता के पास नहीं पहुंच सकता हैं'' यदि आप परमेश्वर से दूर है और यदि उसके साथ सही सबंध रखना चाहते हैं तो आप यीशु के पास आइये जो मार्ग, सच्चाई और जीवन है।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि किस प्रकार से यीशु एक मार्ग है? यीशु के एक चेले ने उससे पूछा था कि प्रभु हम नहीं जानते तू कहां जाता है? तो मार्ग कैसे जानें? (यूहन्ना 14:5)। यीशु पर एक चेला संदेह करता था तथा उसके और भी चेले शक करते थे कि यीशु जो बातें कर रहा है उनका अर्थ क्या है? यानि उन्हें कई बार यीशु की बातें सुनकर बड़ा अचम्भा होता था। जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसकी यात्रा बड़ी यातनाओं तथा ''जोखिमों से भरी हुई थी। उसे क्रूस की मृत्यु का सामना करना था तथा यूहन्ना उसके बारे में लिखता है कि ''वह परमेश्वर का मेम्ना है जो सारे जगत के पापों को उठा ले जाता है।'' (यूहन्ना 1:29)। इब्रानियों का लेखक उसके विषय में लिखता है, ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठा कर आज्ञा माननी सीखी, और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:8-9)।

प्रेरितों 1:9 में हम पढ़ते हैं कि वह ऊपर उठा लिया गया और अपने पिता के पास चला गया। आगे की आयतों में हम पढ़ते हैं कि जिस प्रकार से वह वापस स्वर्ग में गया है उसी प्रकार से वह वापस आयेगा। परन्तु बात तो यह है कि अभी भी चेले यह बात समझ, नहीं पा रहे थे, वे सोच रहे थे कि जिसके पीछे हम चल रहे हैं वह तो वापस जा रहा है। उनकी समझ में नहीं यह आ रहा था कि यह कैसा मार्ग है? वे सोचने लगे कि यह तो हमें छोड़ के चला जायेगा तथा हम किसके पास जाएं? आज भी कई लोगों के मन में यही विचार आता होगा कि हम यीशु के पीछे चलें या न चलें? हम भी कई बार, इस प्रकार की दुविधा में, पड़ जाते हैं और सोचने लगते है। हमारे अंदर कई बार विचार आता है कि मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा? कई बार हम थोमा की तरह विचार करने लगते हैं। कई

बार लोग यीशु के मार्ग को छोड़कर वापस संसार में चले जाते हैं। बहुत से लोग ऐसे है जिनके पास कोई आशा नहीं है। परन्तु जो यीशु के मार्ग पर चलते हैं उनके पास अनन्त जीवन की आशा है। यीशु ने कहा था और यशायाह ने भी भविष्यवाणी की थी कि वह एक मार्ग है। (यशायाह 42:16)।

यीशु ने कहा था कि जगत की ज्योति मैं हूं, जो मेरे पीछे चलेगा, वह अंधकार में न चलेगा। (यूहन्ना 8:12; 12:35)। जब हम प्रभु यीशु में आ जाते है तब हम ज्योति की संतान बन जाते है। (इफिसियों 5:8-16)। यीशु एक ऐसा मार्ग जो जो हमें हमारे जीवन का उद्देश्य बताता है।

प्रभु यीशु मसीहीयों के लिये एक उदाहरण है। (फिलि. 2:5-10)। केवल प्रभु यीशु में हम उद्धार पा सकते हैं क्योंकि कोई और नाम नहीं है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। (प्रेरितों 4:12)। यदि आप इस मार्ग को अपना लेगें तो आपके सारे संदेह दूर हो जायेंगे।

फिर हम देखते हैं कि यीशु ने यह दावा किया था कि मैं सच्चाई हूं। यीशु ने हमेशा लोगों को परमेश्वर का सत्य बताया। सत्य के बारे में कई लोग यह दावा करते हैं कि वे सत्य को जानते हैं। वे कहते हैं कि वे जीवन के सत्य को जानते हैं। क्या हम जानते हैं कि हम पृथ्वी पर क्यों हैं? हम यहां से कहां जायेंगे? तथा यहां से जाने के पश्चात हमारी आत्मा का क्या होगा? परमेश्वर के पास जाने के लिये हमें सच्चाई को जानना आवश्यक है और वो सच्चाई है प्रभु यीशु मसीह। यीशु का मार्ग सत्य का मार्ग है। यीशु ने कहा था, ''सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना 8:32)। यूहन्ना हमें बताता है कि अनुग्रह और सच्चाई यीशु के द्वारा आई। यीशु वो सच्चाई है जो आत्मिक चट्टान है जिसके ऊपर हमें अपने आत्मिक घर को बनाना हैं (मत्ती 7:24-27)। यीशु सच्चाई के साथ एक दृण नींव भी है।

यीशु ने कहा था कि वह जीवन है। यीशु हमारा जिंदा प्रभु है। वह तीसरे दिन परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा मृतकों में से जी उठा। हम सब अपने जीवनों को जीना चाहते हैं। हम अपने जीवन के बारे में सोचते रहते हैं कि किस प्रकार से जीवन जिया जाए? यीशु ने कहा था ''कि मनुष्य यदि सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण या आत्मा की हानि उठाये तो उसे क्या लाभ होगा?'' (मत्ती 16:26)। हम आत्मिक प्राणी है। मरने के बाद हमारी आत्मा अनन्तकाल में चली जायेगी। बाइबल बताती है कि ''मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना आवश्यक है।'' (इब्रा. 9:27)। ''मरने के पश्चात आत्मा परमेश्वर के पास लौट जायेगी'' (सभो. 12:7) ''यदि हम पापों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो हमें बपतिस्मा लेकर यीशु के लोहू के सम्पर्क में आना पड़ेगा।'' (1 यूहन्ना 1:7)। ''सुसमाचार का पालन करना है।'' (प्रेरितों 8:35-39; रोमियों 6:1-11)। केवल यीशु ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा हमें नया जन्म प्राप्त होता है। (यूहन्ना

3:3-5) ''यीशु में हम नई सृष्टि बन जाते हैं।'' (2 कुरि. 5:14) यीशु ने कहा था ''पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूं।'' (यूहन्ना 11:27)। मित्रो, यीशु वो मार्ग है जिसमें हमें अनन्त जीवन तथा आत्मिक आशिषें मिलती हैं। (1 पतरस 1:8 इफि. 1:3)। यीशु आज हमारे लिये मार्ग, सच्चाई और जीवन है।

प्रवेश कौन करेगा?

सनी डेविड

मित्रो, मैं एक बार फिर से इस बात में बड़ी ही प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं कि परमेश्वर ने मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी है कि मैं आपका ध्यान बार-बार उसके बहुमूल्य वचन की ओर दिलाऊं। इस संसार में अनेकों ऐसी बातें हैं जिनमें अकसर हम ऐसे लीन हो जाते हैं कि हम अपने सृष्टिकर्त्ता और उसके द्वारा सौंपे गए कर्त्तव्यों को लगभग भूल से जाते हैं। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि इस संसार में हम सब एक यात्री के समान हैं, जो कुछ समय के लिये एक देश से दूसरे देश को चला जाता है, और फिर वहीं वापस आ जाता है। पवित्र वचन कहता है, ''तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।'' (सभोपदेशक 12:7)। प्रेरित पौलुस कहता है, कि हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है। (फिलिप्पियों 3:20)।

परन्तु स्वर्ग में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम है। प्रभु यीशु ने एक स्थान पर कहा, ''यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।'' (लूका 18: 3)। इसलिये, मनुष्य को चाहिए कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये, पाप से अपना मन फिराए और अपने आपको एक छोटे बालक की तरह अपने स्वर्गीय पिता के हाथों में उसकी इच्छा पर चलने के लिये सौंप दे। फिर, एक और स्थान पर प्रभु ने कहा, ''कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।'' (मत्ती 19: 23)। ऐसा उसने इसलिये कहा, क्योंकि धनी लोग अपने जीवन में सबसे प्रमुख स्थान अपने धन को देते हैं। इस बात का एक उदाहरण हमें नए नियम में एक बड़े ही धनी मनुष्य के जीवन में मिलता है। वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहता था, सो वह प्रभु के पास आया और उसने प्रभु से पूछा, कि मैं स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये क्या करूं? परन्तु जब प्रभु ने उस से कहा, कि तू अपना धन-सम्पत्ति त्यागकर मेरे पीछे हो ले और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा तो वह यह सुनकर बड़ा ही उदास हुआ और प्रभु के पास से चला गया। (मत्ती 19:16-22)।

प्रभु यीशु की एक बड़ी ही निश्चित शिक्षा यह थी कि ''पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।'' (मत्ती 6:33)। परन्तु अभी जिस मनुष्य के बारे में हम ने देखा, उसका दृष्टिकोण स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के प्रभु यीशु के इस सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत था। किन्तु, इस प्रकार के दृष्टिकोण के साथ कोई भी मनुष्य स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा।

फिर, प्रभु ने यह भी कहा कि ''जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' (मत्ती 7:21)। अर्थात, कदाचित कोई मनुष्य अपने आपको बड़ा ही धर्मी समझें, शायद वह हमेशा उठते-बैठते प्रभु का नाम भी ले, और उससे प्रार्थना भी करे, परन्तु यदि वह मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलता, उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, तो वह स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश न करेगा। यही कारण है, कि प्रभु ने एक जगह कहा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो?'' (लूका 6:46)। इसलिये, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना है। यदि हम परमेश्वर की बताई गई प्रत्येक आज्ञा का पालन करते है तो हम जानते हैं, कि हम अवश्य ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। और परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलने का अर्थ यह है, कि हम प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानेंगे, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को अपने पुत्र यीशु के द्वारा जगत पर प्रकट किया है। (इब्रानियों 1:1-2)। सो प्रभु यीशु ने कहा कि ''यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है। अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या कहूं, और क्या-क्या बोलूं। और मैं जानता हूं, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूं।'' (यूहन्ना 12:47-50)। सो जो कुछ भी प्रभु यीशु हमें आज्ञा देता है, जब हम उसे मानते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं, और इसलिये हम जानते हैं कि हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 7:21)।

परन्तु, प्रभु ने कहा कि ''जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।'' (लूका 9:62)। अर्थात, जो कोई उसकी आज्ञाओं को मानकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये कदम उठा लेता है, परन्तु फिर पीछे देखने लगता है, अर्थात सांसारिक बातों में उलझने लगता है, लोभ तथा अभिलाषाओं की ओर झुकने लगता है, ऐसे मनुष्य के लिये स्वर्ग

के राज्य में कोई स्थान नहीं है।

फिर, प्रेरित पौलुस इस विषय में कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुशगामी, न चोर न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।'' (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। और फिर एक और जगह वह यूं कहता है, ''शरीर के काम तो प्रगट है, अर्थात व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्ति पूजा, टोना वैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाकीड़ा, और उनके ऐसे और-और काम है, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं, जैसा पहिले भी कह चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।'' (गलतियों 5:19-21)।

और फिर, यूहन्ना 3 अध्याय में हम यूं पढ़ते है, ''फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।''

क्या आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते है? तो आप को नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जल और आत्मा से जन्म लेने का अभिप्राय यह है, जब हम यीशु मसीह की बातों को सुनते और उन्हें मानते हैं, तो हमारा जन्म इस प्रकार से आत्मा से होता है, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, जो बातें मैं ने तुम से कही है वे आत्मा है। (यूहन्ना 6:63)। और जब हम आत्मा की शिक्षा अनुसार बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाते और उसमें से बाहर आते हैं, तो इस तरह से हमारा जनम जल से होता है। इसीलिये प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया।'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। और फिर एक और जगह वह कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया,

वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।'' (रोमियों 6:3-4)।

अर्थात जब हम प्रभु मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों से मन फिरा लेते हैं, यानी पाप के लिये मर जाते है, और फिर बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाते हैं, तो हमारा पुराना मनुष्यत्व यीशु मसीह की मृत्यु की समानता में जुट जाता है। और फिर, इसी प्रकार से उस जल-रूपी कब्र में से बाहर निकलकर हम यीशु मसीह के जी उठने की समानता में हो जाते हैं, ताकि आगे को पाप के वश में न रहे परन्तु नये जीवन की सी चाल चलें। इस प्रकार से, जल और आत्मा से नया जन्म लेकर मनुष्य स्वर्ग के राज्य के योग्य बन जाता है।

क्या आपने अपने पुराने मनुष्यत्व से छुटकारा पाकर नया जन्म प्राप्त कर लिया है? यदि आप स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आपको नए जन्म की आवश्यकता है, क्योंकि प्रभु ने कहा, ''यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' प्रभु अपने वचन की ज्योति में चलने के लिये आपको साहस वा बल दे।

प्रभु का दिन

जे. सी. चोट

परमेश्वर ने तमाम दिनों को बनाया। कुछ ऐसे दिन भी बनाये जिन्हें उसने अपने लिये विशेष रखा। पुराने नियम में परमेश्वर ने सबत का दिन दिया था। (निर्गमन 16:26) यह मूसा द्वारा दी गई दस अज्ञाओं में से एक थी। यह एक ऐसा दिन था जो विशेष करके परमेश्वर ने अपने लिये रखा था और इसलिये वह कहता है, ''तू विश्राम दिन को पवित्र मनाने के लिये स्मरण रखना।'' (निर्गमन 20:8) सबत के दिन को विश्राम दिन भी कहते हैं। (लैव्यवस्था 16:31)।

यीशु मसीह के समय में भी हम देखते हैं कि पुराना नियम चल रहा था और तब भी सबत का दिन मनाया जाता था। परन्तु हम पढ़ते हैं कि यीशु ने कहा था कि पुराना नियम मैं लोप करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूं। (मत्ती 5:17)। लूका 24:44 में उसने कहा था, ''यह मेरी वे बातें हैं, जो मैने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं थी, कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्दूक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, वे सब पूरी हों।'' यह बात यीशु ने अपनी मृत्यु गाड़े जाने तथा मृतकों में से जी उठने के पश्चात कहीं थी। हम देखते हैं कि अपनी मृत्यु के द्वारा उसने पुराना नियम, सबत तथा दसवां अंश देने वाली आज्ञा को हटा दिया था। तथा उसकी मृत्यु के बाद नया नियम आया। (इब्रानियों 9:15-17, 10:8-10)

यद्यपि यीशु ने सबत के साथ पुराने नियम को हटा दिया, परन्तु पुराने नियम

को पूरा करके उसने नया नियम शुरू कर दिया, परन्तु फिर भी आज बहुत से लोग पुराने नियम की बहुत सी बातों को मानना चाहते हैं। बहुत से लोग सबत को मानना चाहते हैं तथा दसवें अंश की शिक्षा को भी मानते हैं। प्रेरित पौलुस ऐसे लोगों के लिये कहता है कि वे अभी भी व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, ''और आज जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है। परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा। (2 कुरि. 3:1-17)

परन्तु जबकि पुराना नियम सबत के दिन के साथ हटा दिया गया तब आज हमारे पास क्या है? जैसा कि मैंने पहिले भी बताया कि हमारे पास नया नियम है। इस नियम में परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा हमसे बातें करता है। (मत्ती 11:5, इब्रा. 1:1, 2)। आज हमारे पास नये नियम में अराधना का दिन है जिसे प्रभु का दिन कहा जाता है। (प्रकाशित 1:10)। इसे सप्ताह का पहिला दिन भी कहते हैं। यह सबत के दिन की तरह विश्राम का दिन नहीं है। बल्कि उपासना करने का दिन है। (प्रेरितों 20:7)। प्रभु ने अपने लोगों के लिये यह दिन बनाया है ताकि वे इस दिन उसकी अराधना करें। कई लोग कहते हें कि यह पाक सबत का दिन है जो कि अनुचित है।

हमने देखा था कि इस दिन की एक मुख्य विशेषता यह है कि प्रभु यीशु इस दिन मृतकों में से जी उठा था। (मत्ती 28:1) जब हम प्रेरितों 2 अध्याय में आते हैं तो हमें देखने को मिलता है कि इस दिन प्रेरितों को पवित्र आत्मा मिला था। इसी दिन पतरस द्वारा पहिला प्रवचन दिया गया था, तथा सुसमाचार सुनकर लगभग तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया था। पिनतेकुस्त का दिन यहूदियों का एक त्योहार था। जिसे मनाने के लिये सब इक्ट्ठे हुए थे और इस दिन कलीसिया की स्थापना हुई थी। यह सब परमेश्वर की एक योजना थी।

बाद में हम पढ़ते हैं कि प्रभु के लोग यानि मसीही लोग सप्ताह के पहिले दिन (सन्डे) को अराधना के लिये मिलते थे। प्रेरित पौलुस के बारे में लिखा है, ''सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था उनसे बातें की और आधी रात तक बातें करता रहा।'' (प्रेरितों 20:7)। अब प्रश्न यह उठता है कि वे लोग सप्ताह के पहिले दिन क्यों इक्ट्ठे होते थे? वे इस दिन इसलिये मिलते थे क्योंकि प्रभु ने उन्हें यह आज्ञा दी थी। अब उन्होंने यह कितनी बार किया? हम देखते हैं कि जैसे पुराने नियम में लोग प्रत्येक सबत को मानते थे उसी प्रकार से हम प्रत्येक प्रभु के दिन रविवार को अराधना करते हैं। अब हम देखते हैं कि उनसे यह नहीं कहा गया था कि प्रत्येक सबत को मानना है और उसी प्रकार से हमसे यह नहीं कहा गया कि प्रत्येक सप्ताह का पहिला दिन मानना है। सप्ताह का पहिला दिन रविवार प्रत्येक सप्ताह आता है। इस दिन हम प्रभु यीशु की मृत्यु को याद करते हैं। प्रभु भोज

मसीही लोग प्रत्येक सप्ताह लेते हैं। (1 कुरि. 11:23-24) और इसी बात के बारे में हम प्रेरितों 2:42 में भी पढ़ते हैं।

प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन मसीही लोग अराधना में चंदा भी देते है। (1 कुरि. 16:1-2)। यह हम इसलिये करते हैं क्योंकि इस दिन सारे मसीही इक्ट्ठे होते हैं। क्या हम इस बात से इंकार कर सकते हैं? प्रेरित पौलुस या किसी भी चेले ने यह नहीं कहा कि घर-घर जाकर चंदा इक्ट्ठा करो, बल्कि यह कहा कि सप्ताह के पहिले जब तुम इक्ट्ठा होते हो तो अपनी आमदनी अनुसार चंदा दो।

अब मुझे आशा है कि आप प्रभु के दिन का महत्व समझ गये हैं। जैसा कि पहिले भी हम देख चुके हैं कि यह सबत का दिन नहीं है परन्तु एक ऐसा दिन है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये चुना है। यह हफ्ते का पहिला दिन है जिसे हम रविवार कहते हैं।

आज कई देश हैं जहां सन्डे को छुट्टी मनाई जाती है। कई तो ऐसे हैं जिनका मसीहीयत या यीशु से कोई लेना-देना नहीं है लेकिन फिर भी उन्हें इस दिन छुट्टी मिल जाती है। मसीहीयों के लिये यह दिन बहुत अच्छा है, क्योंकि वे इस दिन अराधना कर सकते है। कई देशों में सन्डे के दिन काम होता है। ऐसी जगाहों में लोग सुबह जल्दी अराधना कर लेते है। या फिर शाम को अराधना करते हैं। कई स्थानों पर बड़ी कठिनाई होती है परन्तु विश्वासी मसीही अराधना के लिये फिर भी किसी तरह से अराधना का समय निकाल लेते हैं।

क्या आप एक मसीही हैं? यदि नहीं तो आज ही यीशु में विश्वास कीजिये। उसके नाम का अंगीकार, करके कि वह परमेश्वर का पुत्र है, बपतिस्मा लीजिये। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16)। प्रभु आपको अपनी कलीसिया या मण्डली में मिला देगा और तब आप प्रत्येक प्रभु के दिन उसकी अराधना कर सकते हैं। परमेश्वर आपको आशीष दे जबकि आप उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

उपवास और मसीही व्यक्ति

उपवास के लिए बाइबल में मुझे कोई आज्ञा नजर नहीं आई। मूसा की व्यवस्था (पुराने नियम की पहली पांच किताबों) में "उपवास" शब्द का कोई उल्लेख नहीं मिलता। मूसा की व्यवस्था में निकटतम विचार अपनी आत्मा को या देह को दुख देने के हवाले से है (उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 16:29, 31)। जीव को दुख देने का एक ढंग उपवास था (देखें भजन 35:13)। पुराने नियम के अंतिम भाग में उपवास का संबंध पाप के कारण शोक के साथ रहा है। जकर्याह के समय में यहूदियों के इतिहास में दुखद घटनाओं को स्मरण करने के लिए चौथे पांचवें, सातवें, और दसवों महीनों में उपवास के निश्चित समय ठहराए गए थे।

जिस समय यीशु आया, तब वार्षिक उपवासों के अलावा, फरीसियों ने सप्ताह के दो दिन उपवास के लिए ठहरा दिए थे: पांचवां दिन (क्योंकि उनका मानना था कि उस दिन पत्थर की पट्टियां लेकर मूसा पहाड़ पर गया था) और दूसरा दिन (क्योंकि उनका मानना था कि उस दिन वह नीचे उतरा था) (लूका 18:21)।

यद्यपि, यह आज्ञा नहीं थी किन्तु यीशु ने मत्ती 6:16-18 में उपवास को शोक जताने के लिए स्वीकृत ढंग के रूप में स्वीकार किया। बेशक, उसने जोर दिया, कि उपवास वैयक्तिक, अर्थात व्यक्ति और परमेश्वर के बीच में (निजी) हो। यीशु ने एक और जगह मरकुस 2:18-20 (तुलना मत्ती 9:14, 15; लूका 5:33-35) मैं उपवास के संबंध में बात की। ध्यान दें कि यीशु के चेले उपवास नहीं रखते थे। (यदि उद्धार के लिए उपवास आवश्यक होता, तो निश्चय ही वे रखते होते)। दूसरी ओर, यीशु ने यह माना कि उसके पृथ्वी को छोड़े जाने के बाद, वे उपवास रखेंगे। परन्तु कब और कैसे, यह नहीं बताया।

अब हम मसीही युग में आ जाते हैं। हमें किसी मसीही द्वारा उसकी निजी उपासना के भाग के रूप में उपवास का हवाला नहीं मिलता (हम उन अनैच्छिक उपवासों को नहीं मानते जब पतरस को भोजन नहीं मिला था (2 कुरिन्थियों 6:5; 11:27)। मसीही लोगों द्वारा स्वेच्छा से उपवास के केवल दो ही हवाले मिलते है : प्रेरितों 13:2, 3 और 14:23 दोनों हवालों में मण्डलियों द्वारा ठहराई किसी बात का कोई संबंध नहीं है। यदि मसीही लोग गुप्त रूप से उपवास रखते थे (और मैं मान लेता हूं कि ऐसा मरकुस 2 के आधार पर करते थे), तो परमेश्वर ने इसके बारे में हमें बताना उचित नहीं समझा।

मैं इन निष्कर्षों पर पहुंचा हूं : (1) मसीही व्यक्ति के लिए उपवास उसकी पसंद और इच्छा के अनुसार है। नये नियम में उपवास के लिए कोई "नियम" नहीं ठहराये गए कि कब और कैसे उपवास रख जाए? कइयों को उपवास आत्मिक लाभ के लिए योजनाबद्ध ढंग से और लगातार रखना लाभदायक लगता है जिसका कइयों को पता नहीं। (2) उपवास का संबंध साधारण उपवास से होता है। प्रार्थना करने वाले लोग परमेश्वर के साथ बात करने में इतने लीन हो गए और खो गए कि उन्हें भूख और समय का ध्यान ही न रहा। हम सभी का प्रार्थना का जीवन ऐसा ही होना चाहिए। (3) उपवास रखना अपने आप में अपनी इच्छा और पसंद के अनुसार हो सकता है, सामान्य नियम कि प्रभु और उसका कार्य किसी भी और काम से (जिसमें भोजन भी शामिल है) अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती 6:33)।

क्या कोई मार्ग है?

यदि वे लोग जो व्यस्क हो जाते हैं वे सब पापी हैं जो पाप करते हैं तो पाप क्या असर करता है? क्या परमेश्वर के नियमों को तोड़ने के परिणाम लिखने पड़ेंगे? क्या कोई कर्म है जिससे हम अपने पाप के दोष को कम कर सकते हैं?

जिस प्रकार से सरकारी नियमों को तोड़ने पर दण्ड होता है वैसे ही परमेश्वर

के नैतिक और आत्मिक नियमों को तोड़ने का दण्ड भी मिलता हे। वास्तव में रोमियों 6:23 यह समझाता है कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।"

याकूब 1:14, 15, "परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।"

हर प्राण की जो पाप के बोझ से दबा है पुकार एक ही है, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं। मुझे इस मृत्यु देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियों 6:24)। एक उत्तर तो है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद.... अत: अब जो मसीह यीशु में उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 7:25; 8:1)।

क्या प्रेरितों 15:20, 29 की पाबंदियां हम पर लागू होती हैं?

"परन्तु उन्हें लिख भेजे कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोटे हुओं के मांस से और लहू से दूर रहें। कि तुम मूरतों पर बलि किए हुओं से और लहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से परे रहो। इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ।"

विद्वान इस बात पर सहमत नहीं है कि प्रेरितां 15:20 और 29 की पाबंदियां आरंभिक कलीसिया पर किस हद तक लागू होती थी। कई लोग (मैं उन्हें "पक्ष 1" का नाम देता हूं) कहते हैं कि पाबंदियों केवल विशेष परिस्थितियों के लिए थी। दूसरे ("पक्ष 2") जोर देते हैं कि पाबंदियां सब के लिए थीं और उन्हें आज भी माना जाना चाहिए।

पक्ष 2 प्रेरितों 15 में "आवश्यक शब्द बातों" की ओर ध्यान दिलाता है, परन्तु पक्ष 1 कहता है कि इसका पक्ष "उद्धार के लिए आवश्यक बातों" के बजाय "यहूदी और गैर-यहूदी मसीहियों की संगति बताने के लिए आवश्यक" हो सकता है। पक्ष 2 कहता है, "यह तथ्य कि पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस पत्र को मिलाया, यह दिखाता है कि वह चाहता था कि हम सब इसके निर्देशों का पालन करें, "परन्तु पक्ष 1 जोर देता है कि यह इतना आवश्यक नहीं है। इसके स्थान पर, पक्ष 2 का सुझाव है कि प्रेरितों 15 का विवरण (1) आरंभिक कलीसिया के इतिहास के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में और (2) साधारण तौर पर समस्याओं को सुलझाने के लिए हमारी शिक्षा के लिए लिखा गया है।

पक्ष 1 ध्यान दिलाता है कि पत्र में समिति श्रोताओं को सम्बोधित किया गया

है (15:23), परन्तु पक्ष 2 जोर देता है कि यह पत्र इससे भी दूर ले जाया गया था (16:4, 6)। इसके अलावा, पक्ष 2 ध्यान दें कि पौलुस के सभी पत्र श्रोताओं के नाम हैं (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2; आदि), परन्तु उन पत्रों में दिए गए निर्देश आज भी हम पर लागू होते हैं। पक्ष 1 पूछता है कि "यदि प्रेरितों 15 का पत्र सबके लिए आवश्यक बनाने के इरादे से लिखा गया था तो पतरस ने उस पत्र का उल्लेख तब क्यों नहीं किया जब उसने यरूशलेम की सभा में विचार किए गए इसी विषय अर्थात गैर-यहूदी मसीहियों के लिए खतना करने पर गलातियों के नाम पत्र लिखा? कुरिन्थुस के मसीहियों को लिखते समय उसने मूर्तियों के चढ़ावे को खाने की बात किसी की इच्छा पर क्यों छोड़ी, उन्हें साफ मना क्यों नहीं किया, जैसे प्रेरितों 15 के पत्र में किया गया था?" पक्ष 2 उत्तर देता है, "गलातियों के नाम पौलुस के पत्र में जोर दिया गया था कि मूल प्रेरितों ने उसको सिखाने में कई योगदान नहीं दिया (गलातियों 2:6)। मूल प्रेरितों की व्यवस्था का उल्लेख करना अतिप्रभावी होता। कुरिन्थियों के नाम पौलुस की पत्री का आरंभ यह कहते हुए हुआ कि मसीहियों को मूर्तियों के बलिदान खाने का अधिकार था, परन्तु इसका अन्त दूसरों को ठोकर लगने से बचाने के लिए यह कहते हुए कहा कि मसीहियों को उन चीजों को नहीं खाना चाहिए जिनके बारे में उन्हें पता हो कि उन्हें मूर्तों के सामने चढ़ाया गया है" (1 कुरिन्थियों 10:23-33)। अन्य शब्दों में पौलुस उसी बुनियादी निष्कर्ष पर पहुंचा जो प्रेरितों 15 के पत्र में दिया गया था: दूसरों की खातिर, मूर्तों के सामने बलिदान की हुई वस्तुओं को मत खाओ।

बहुत से लोग इस बात से सहमत है कि नया नियम साधारण तौर पर व्यभिचार और मूर्तों पर बलि की हुई वस्तुओं को खाने को गलत कहता है। (1 थिस्सलुनीकियों 4:3,5,1 कुरिन्थियों के 10:19-21; देखिए प्रकाशितवाक्य 2:14, 20)। इसलिए ज्यादा असहमति, लहू के खाने पीने की मनाही पर ही केन्द्रित है, जिसका नये नियम में कहीं और उल्लेख नहीं है। इस प्रथा को मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले (उत्पत्ति 9:4) और व्यवस्था में भी गलत बताया गया था (लैव्यव्यवस्था 17:8-16)। इस मनाही के कारणों में बीमारियों को फैलाने से रोकने के लिए कुछ स्पष्ट धर्मशास्त्रीय कारण और अस्पष्ट व्यावहारिक कारण हैं।

लहू खान/पीने को व्यवस्था दिए जाने से पहले ही गलत बताया गया था, इसलिए यह एक सामान्य नियम लगता है कि परमेश्वर यही चाहता है। इसलिए मैं, लहू न तो खाता हूं और न पीता हूं। परन्तु, मैं इस बात पर कट्टर नहीं हो सकता। "हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले" (रोमियों 14:5ख)।

(लहू खाने/पीने की मनाही आज बेशक लागू है, परन्तु किसी को खून देने पर कोई पाबंदी नहीं है।)

एक युवा दासी कन्या

बौनी रशमोर

हम बाइबल में दूसरे राजा की पुस्तक के पांचवें अध्याय में नामान नामक व्यक्ति जो सीरियन सेना का सेनापति था, उसकी चंगाई का वर्णन पढ़ते हैं। यह व्यक्ति एक शूरवीर सूरमा था परन्तु कोढ़ के रोग से पीड़ित था। जब हम पवित्र शास्त्र के इस हवाले को पढ़ते हैं तो हमारा ध्यान नामान की आश्चर्यजनक चंगाई की ओर केंद्रित होता है। हम परमेश्वर की आज्ञा को मानने के महत्व की ओर ध्यान देते हैं। हम अभिमान और अहंकार और क्रोध जो एक भ्रांति झूठा विश्राम है प्राय: एक साथ घमंड के साथ देखे जाते है। तो भी मैं इस अध्ययन में आपका ध्यान दूसरी और तीसरी आयतों की ओर आकर्षित करूंगी।

''आरामी लोग दल बांधकर इस्राएल के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की को बन्धी बनाकर ले आए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी। उसने अपनी स्वामिनी से कहा, ''यदि मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यदूक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता। क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता।''

यहां पर इब्रानी शब्द सेविका का मतलब है एक बालिका अपने बालिकापन से योवन की ओर बढ़ती हुई। यह युवा कन्या इतनी बड़ी थी कि वह एक सेविका के रूप में नामान की पत्नी की सेवा कर सके, परन्तु वह एक यौवन प्राप्त युवती नहीं थी।

कृपया नीचे लिखे विचारों पर ध्यान दें जो इस युवा इब्रानि दासी से बटोरे गए हैं।

उसने अपने माता-पिता द्वारा दी गई शिक्षाओं को ध्यान से सुना

यह युवा बालिका इस बात में आशिषित थी कि उसके माता-पिता ने उसको एक सच्चे परमेश्वर के बारे में शिक्षा दी- इस्राएलियों का परमेश्वर,

''इसलिये आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रखे कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं।'' (व्यवस्था विवरण 4:39)।

उसके माता-पिता मूसा की शिक्षाओं को दिल से मानते थे जैसा व्यवस्था विवरण 6:6-9 में लिखी हैं। उन्होंने उस हर पल का प्रयोग किया जो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम जगा सकता था। जब वह सीरियन सेना द्वारा बन्धी बनाकर नामान के घर में उसकी पत्नी की सेवा करने के लिये रखी गई तब वह उस प्रेम और विश्वास को अपने साथ रखे रही।

वह परमेश्वर और उसके सेवकों की सामर्थ को समझती थी

यद्यपि एलीशा ने किसी भी कोढ़ से ग्रस्त रोगी को चंगा नहीं किया था, ''और एलीशा भविष्यदूक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर सीरियावासी नामान को छोड़ उनमें से कोई शुद्ध नहीं किया गया।'' (लूका 4:27)।

इस दासी का यह विश्वास था कि परमेश्वर अपनी सामर्थ द्वारा कोढ़ से चंगाई दे सकता है। वह परमेश्वर की सामर्थ को समझती थी जिसने जगत की सृष्टि की थी (उत्पत्ति पहला अध्याय)।

वह इतिहास 29:11-12 के वचनों पर विश्वास करती थी, ''हे यहोवा महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है, हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभी के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। धन और महिमा तेरी ओर से मिलती है, और तू सभी के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में है, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।''

इस दासी का पूरा विश्वास था कि परमेश्वर नामान को अपने भविव्यदूक्ता एलीशा द्वारा कोढ़ से शुद्ध कर सकता है।

एक अपरिचित देश में यह युवादासी अपने विश्वास को साथ लेकर गई

इस मुख्य दासी ने इस मूर्तिपूजक देश को परमेश्वर में अपने विश्वास से वंचित होने नहीं दिया। अपने आस-पास के माहौल के बावजूद भी वह अपने विश्वास में दृढ़ रही।

यद्यपि उसने अपने आपको कठिन परिस्थितियों में पाया, परन्तु वह परमेश्वर की स्तुति करती रही

यह कन्या जिसको उसके माता-पिता से और अपने देश से छीन कर लाया गया था उसे जबरदस्ती दास्वत के कार्य के लिये मजबूर किया गया। तो भी वह जीवन से निराश व दुःखी न हुई। उसने परमेश्वर पर दोष नहीं लगाया या यह कहा हो, ''मैं कितनी बदनसीब हूं।'' इसके बजाय उसने इस परिस्थिति का लाभ उठाया जो उसको मिली और जिस परमेश्वर की वह आराधना करती थी उसकी सामर्थ्य को दर्शाया। उसने सुझावा दिया कि यदि मेरा मालिक नामान सामरिया में जो भविष्यदूक्ता है उससे मिलेगा तो अपने रोग से शुद्ध हो जाएगा। उसने ऐसा नहीं कहा कि शुद्ध हो सकता है। परन्तु पूरे दृढ विश्वास से कहा कि भविष्यदूक्ता एलीशा उसे शुद्ध कर देगा।

उसने अपने पकड़ने वालों के प्रति आदर सम्मान जताया और जो काम उसे दिया गया था, उसको भली प्रकार निभाया।

इस कन्या कि इच्छा थी कि जिनकी वह सेवा करती है उनका भला हो। वह दिल से चाहती थी कि नामान अपने रोग से पूरी तरह चंगाई प्राप्त करे।

इसमें कोई शक नहीं कि उसने अपना कार्य जिसके लिये वह रखी गई थी, पूरे परिश्रम और निष्ठा और बगैर शिकायत के किया और इसका प्रमाण नामान की पत्नी के साथ उसके अच्छे संबंधों को देखने से मिलता है। यदि उसका स्वभाव चिड़िचिड़ा होता तो साथ-साथ काम करने वाला न होता और शायद एक गुलाम दासी के सुझाव को नकार दिया जाता, परन्तु यहां देखने में आता है कि इस सकारात्मक अनुकूल सूचना को मान लिया गया। नामान की पत्नी ने अपने पति से इस इस्राएली युवा, गुलाम, कन्या के सुझाव के बारे में बताया। क्योंकि एक एइस्राएली युवा कन्या परमेश्वर में अपने विश्वास में स्थिर रही और अपनी मालकिन की सेवा सही ढंग से करती रही।

क्योंकि एक युवा कन्या में एक मात्र सच्चे परमेश्वर के बारे में बताने की हिम्मत थी, इस कारण एक अविश्वासी ने परमेश्वर को ग्रहण कर लिया।

हर एक मसीही-चाहे युवा हो या वृद्ध हो इस युवा कन्या से जिसका हमें नाम भी नहीं मालूम बहुत कुछ सीख सकता है। इस बात की आवश्यकता है कि हम इस युवा कन्या के आचरण और सही कार्यों की नकल करें।

हमें जब भी ऐसे सुअवसर मिलते हैं तो हमें उनका उपयोग ऐसे महान परमेश्वर के बारे में बताने में करना चाहिए, जिसकी हम आराधना करते हैं और उसकी सेवा करने का दावा करते हैं। हमें अपनी कठिनाइयों से बाहर निकलकर और इन दु:ख और परीक्षा की घड़ियों का इस्तेमाल किसी को एक सच्चे परमेश्वर के बारे में बता कर करना चाहिए। आइये हम इस युवा कन्या और ऐसे बहुत से और बाइबल में चर्चित उधारणों का पालन करें जो कठिनाइयों में अपने विश्वास में दृढ़ रहे और परमेश्वर की सेवा से पीछे नहीं हटें।

अनुवादः भाई फ़ैरल

एक महान पुरुष अय्यूब

वैनस हट्टन

भविष्यदूक्ता यहेजकेल ने अपनी पुस्तक यहेजकेल 14:14 और 14:20 में तीन महान पुरुषों का वर्णन किया है। यह मनुष्य नूह, दानिय्येल और अय्यूब हैं। ज़रा सोचें यह पुरुष जब इस संसार में थे तब सचमुच में एक अनोखा, लाजवाब समय था। उस समय संसार में उनकी महानता के उधाहरण बड़े बहुमूल्य थे और आज हमारे लिये भी बहुत अनमोल हैं। हम परमेश्वर के आभारी है कि उसने इन पुरुषों की जीवनियों का इतिहास हम लोगों के ज्ञान प्राप्त करने के लिये सुरक्षित रखा है।

''जितनी बातें पहले से लिखी गई वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई है कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।'' (रोमियों 15:4)

हमें भले मनुष्यों के मार्ग में चलना है। ''तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल, और धर्मियों के पथ को पकड़े रह।''

जिन तीन मनुष्यों का वर्णन पुराने नियम से याकूब की पत्री में किया गया है, उनमें से अय्यूब एक था। अब्राहम और यहेजकेल के साथ अय्यूब का उधाहरण दिया जाता था। इब्रानियों 13:7 हमें बताता है विश्वास का अनुसरण करने के लिये और महान पुरुषों की बातचीत और जीवन शैली पर विचार करने के लिये अय्यूब जैसे लोग हमारा ध्यान एक ऊंचे जीवन स्तर को बिताने की ओर दिलाते हैं।

आज देश के रहने वाले अय्यूब नामक पुरुष के नीचे दिये विचारों पर ध्यान करे।

एक ऐसा मनुष्य जो पवित्र था: हमारा परिचय अय्यूब से एक ऐसे मनुष्य की तरह कराया जाता है जो सिद्ध और धार्मिक था। वह ख़रा था, परिपक्व और उसके नैतिक आचरण पर कोई दाग नहीं था। उसने अपना जीवन वैसे ही व्यतीत किया जैसे याकूब अपनी पत्री 1:2-4 में लिखता है: ''हे मेरे भाईयो, जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है और धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।''

वह धर्मी था क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता था और धर्म के मार्ग पर चलता था। उसके मन में परमेश्वर के प्रति बहुत सम्मान था और वह उसका भय मानता और बुराई से दूर रहता था। (अय्यूब 1:1)।

अय्यूब के प्रति ऐसा एक दूसरा हवाला दो जगह अय्यूब 1:8 और अय्यूब 2:3 में दोहराया गया है।

''यहोवा ने शैतान से पूछा, ''क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य और कोई नहीं है।'' (अय्यूब 1:8; 2:3)।

अय्यूब पाप से घृणा करता था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह सत्य के मार्ग पर मरते दम तक चलता रहेगा। (अय्यूब 27:1-6)

हमें भी, एक पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिये। वास्तव में हमें प्रभु यीशु मसीह को पहन लेना चाहिए और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय नहीं करना चाहिये। (रोमियों 13:11-14)

हमें पवित्रता की ओर बढ़ना चाहिये (रोमियों 6:19-22)।

प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हमें उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाना चाहिये। (2 कुरन्थियों 3:18)

इस बहुमूल्य लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिये अय्यूब हमारी सहायता करता है।

एक धैर्य रखने वाला मनुष्यः बीते हुए वर्षों में जिन भविष्यदूक्ताओं ने संघर्ष किया दु:ख उठाए और धीरज बनाए रखा उनको अपना आदर्श समझने के लिये याकूब ने अपनी पत्री में लिखा है। हम बहुत से ऐसे भविष्यदूक्ताओं के विषय में सोच सकते हैं जो इस श्रेणी में आते है। इसके आगे फिर याकूब परमेश्वर के महान भक्त अय्यूब के धीरज का वर्णन करता है।

''हे भाईयो, जिन भविष्यदूक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें की, उनको दु:ख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। देखो, हम धीरज धरने वालों को धन्य कहते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यंत करूणा और दया प्रकट होती है।'' (याकूब 5:10-11)।

यहां एक ऐसे मनुष्य का वर्णन है जिसने अपना सब कुछ खो दिया था। उसने अपने बच्चे, धन-सम्पत्ति और अपनी तन्दुरूस्ती तक खो दी थी परन्तु इन परीक्षाओं में भी वह अपने विश्वास में अटल रहा। इन सब में धीरज एक कीमती मोती के समान है। इतनी कठिनाइयों के बावजूद उसने अपना धैर्य नहीं खोया। हमें भी ऐसा ही स्वभाव तथा आचरण बनाना चाहिये, यदि हमें एक अच्छा मसीही जीवन व्यतीत करना है।

''आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।'' (इब्रानियों 10:23)।

अपनी सहनशीलता के दौरान अय्यूब कई बातों के बारे में अनजान था। उसको नहीं मालूम था कि परमेश्वर की ओर से उसके विरूद्ध अपने हथियार इस्तेमाल करने की शैतान को पूरी आजादी थी। अय्यूब को नीचे गिराने में शैतान अपने प्रयत्नों मे निष्ठर वा कठोर था।

हम अपने तमाम संघर्षों के बारे में जानते हैं। हम कभी भी निराश न हो, ऐसा न सोचे कि हम दौड़ में पीछे रह जाएं, अपने अन्दर कड़वाहट न आने दें या परमेश्वर पर कभी दोष न लगाएं।

एक सिद्धान्तों वाला मनुष्यः अय्यूब निष्पाप नहीं था, परन्तु वह एक विशेष गुणों वाला मनुष्य था। परमेश्वर ने कई दफा उसको अपना स्नेह कह कर संबोधित किया। परमेश्वर के ऐसे कई महान पुरुष हुए हैं।

''जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुममें प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवाटहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतो की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।'' (मत्ती 20:26-28)

अय्यूब एक विश्वासी और दृढ़ धारणा वाला मनुष्य था। (अय्यूब 1:20, 13:15) वह एक परिवार वाला और आराधना करने वाला पुरुष था (अय्यूब)

वह एक मन फिराने और प्रार्थना करने वाला मनुष्य था। (अय्यूब 4:2) उसने अपना विश्वास कभी भी भौतिक वस्तुओं पर नहीं रखा और जब भौतिक वस्तुएं उससे ले ली गई तो उस समय भी वह अपने विश्वास पर स्थिर रहा। वह परीक्षा के समय, जैसा उसने भविष्यवाणी की थी सोने की तरह निकल कर आया।

''परन्तु वह जानता है कि मैं कैसी चाल चलता हूं; और जब वह मुझे तालेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा।'' (अय्यूब 23:10)

उसने सब कुछ अपने परिवार और दोस्तों की मदद के बिना अकेले सहन किया। जब हम भला काम करके दु:ख उठाते हैं और धीरज रखते हैं तो यह परमेश्वर की नजर में सराहनीय होता है। (1 पतरस 2:20)।

इस महान मनुष्य अय्यूब को परमेश्वर ने जितना अपने संषर्षों से लड़ने से पहले आशिषित किया था उससे कहीं ज्यादा और आशिषित किया।

''यहोवा ने उसका सारा दु:ख दूर किया और जितना अय्यूब के पास पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।'' (अय्यूब 42:10)

परमेश्वर की सेवा करने से हमेशा लाभ ही होता है। हम हमेशा नूह, दानिएल और अय्यूब जैसे महान पुरुषों के उदाहरण याद रखें। अब समय है कि मनुष्य जाति जागे और ऐसे अति महान पुरुषों को पुन: उत्पन्न करें।

अनुवाद: -भाई फ़ैरल

हम कैसे कह सकते हैं कि क्या सही है?

एलबर्ट गार्ड

जब हम एक भवन का निर्माण करते हैं तो हम उसको एक गज़ या मीटर से पहले नापते है। जब हम कोई चीज खरीदते हैं तो उसका वजन चैक करते है। हमारे बैंक के खाते में राशि की संख्या की जांच करते हैं।

परन्तु धर्म के मामले में कि कौनसा धर्म सही और सच्चा है हम कैसे आंकलन करते हैं? क्या मतदान द्वारा इसका चयन करते हैं? क्या हम भावनाओं से इसका चुनाव करते हैं? क्या यह ठीक है जिस तरफ सब लोग जा रहे हैं हम भी उधर ही जाएं? यदि बड़ी संख्या में लोग एक वस्तु पर विश्वास करके उसको मानते हैं तो क्या ऐसा करना उसे सही ठहराता है? इस तरीके से और चीजों का निर्णय लेना हम ठीक नहीं समझते, तो हम इस तरीके से धर्म का चुनाव क्यों करते हैं? सारे संसार से अधिक बहुमूल्य हमारा प्राण है और एक सही निर्णय लेने के लिये हमें एक सच्चे मापदंड को अपनाना चाहिये।

जो अन्तिम शब्द है वह लिखा हुआ शब्द है

स्वर्ग को हमारे उद्धार की इतनी चिंता है कि परमेश्वर ने इसको यीशु मसीह के द्वारा प्रकट किया और पवित्र आत्मा द्वारा इसको लिखवाया। यह बहुत गंभीर

विषय है जब लोग परमेश्वर के लिखे वचन में कुछ जोड़ते हैं या उसमें से निकालते हैं। बाइबल एक अलग किस्म की पुस्तक है क्योंकि यह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई है। यहूदियों को एक औपचारिक चेतावनी दी गई थी : ''जो आज्ञा मैं तुमको सुनाता हूं उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो-जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना।'' (व्यवस्थाविवरण 4:2)।

पौलुस ने सक्रिय जीवन के लिये एक कुंजी दी। ''कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।'' (1 कुरिन्थियों 4:6)

ऐसी ही एक गंभीर चेतावनी बढ़ाने और घटाने के विषय में प्रकाशित वाक्य 22:18-19 में दी गई है:

''मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनाता है, गवाही देता हूं, यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।''

यह हम पर कैसे लागू होता है?

1. हम प्रभु भोज कब लेते हैं?

प्रश्न यह नहीं है कि अधिक संख्या में लोग कब लेते हैं? ऐसा नहीं ''जब मेरी इच्छा होती है तब मैं लेता हूं'' जबकि हम बाइबल को अंतिम निर्णायक मानते हैं तो हमें देखना है कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है?

''सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।'' (प्रेरितों 20:7)

जो केवल एक शिक्षा हमें बाइबल से प्रभु भोज के विषय में मिलती है वह है कि हमें इसे सप्ताह के पहले दिन यानि सन्डे को लेना है। पहली शताब्दी की कलीसिया का इतिहास हमें बताता है कि कलीसिया प्रभु भोज हर सप्ताह के पहले दिन लिया करती थी।

2. कौन, क्यूं कैसे और कुछ मुख्य प्रश्न बपतिस्में से सबंधित हैं

एक दफा फिर हम इसका उत्तर इससे नहीं लेते कि अधिक संख्या में लोग क्या कहते हैं पर इसका उत्तर हम परमेश्वर के प्रेरित वचन से प्राप्त करते हैं।

कौन?

वह जो आयु में बड़े होने के कारण सुन सकते है, समझ सकते हैं, विश्वास कर सकते हैं, मन फिरा सकते है और मसीह को प्रभु जानकर उसका अंगीकार कर सकते है- यह सब वह लोग हैं जो बपतिस्मा ले सकते है। दूसरे शब्दों में

जो यह मानते हैं कि वह पापी है और इस कारण अपराधी है।

''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसीका उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:16)

''क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।'' (रोमियों 10:10)

क्यों?

ताकि वह उद्धार प्राप्त कर सकें, पापों की क्षमा प्राप्त कर सकें और अपने पापों को धो सकें।

''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' (प्रेरितों 22:16)

कैसे?

पानी के पास आकर और नीचे पानी में जाकर, पानी में गाड़े जाकर, जिलाए जाकर और फिर पानी से ुपर आकर। (प्रेरितों 8:35-39; रोमियों 6:3-5)।

3. आराधना का सच्चा मापदण्ड क्या है?

लोग आराधना करते समय इस बात से अज्ञान रह सकते हैं कि सच्ची आराधना क्या है। एथेंस शहर में बहुत सी मूरतें इस बात का प्रमाण थी कि वहां के लोग बहुत धार्मिक थे।

''क्योंकि मैं (पौलुस) फिरते हुए जब तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी बेदी भी आई, जिस पर लिखा था, ''अनजाने ईश्वर के लिये'' इसलिये जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।'' (प्रेरितों 17:23)

यीशु इसलिये नहीं आया कि लोगों को धार्मिक बनाएं, क्योंकि वह तो पहले से ही धार्मिक थे। वह इसलिये नहीं आया कि लोगों को आराधना के लिये ले जाए, परन्तु उनको सही, सच्ची आराधना सिखाने के लिये। कुएं पर सामरी स्त्री को उसने सच्ची आराधना करने के विषय में बताया। ''परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।'' (यूहन्ना 4:24)

उस समय से जिस प्रकार की आराधना परमेश्वर स्वीकार करता है उसमें तीन प्रकार की योग्यताएं होनी चाहिए। यह परमेश्वर से निर्देशित हो, सही आत्मा से की जाए और सच्चाई से की जाए।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि आराधना इन तरीकों से नहीं की जाएगी तो वह व्यर्थ मानी जाएगी, खाली तथा खोखली जिसका कोई लेखा जोखा नहीं।

''और यह व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की विधियों को ध र्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती 15:9)

जैसे नापने के गज या मीटर को नहीं बदल सकते वैसे ही हमें इजाजत नहीं

कि हम इनको बदलें, इन मापदण्डों के अनुसार हमें अपनी आराधना की जांच करनी है। क्या हमारी आराधना बाइबल अनुसार है कि नहीं।

अब मूरतों के बारे में क्या विचार है? यह गलत लक्ष्य है। केवल परमेश्वर की आराधना होनी चाहिए। क्या मैं गलत आत्मा से आराधना कर सकता हूं? लोग प्राय: एक समर्पित आत्मा के रूप में आराधना करने में विफल हो जाते हैं। यह सच्चाई के अनुसार होनी चाहिए, जैसा कि नये नियम में बताया गया है और जैसे अधिकार दिया गया है।

जैसा मैं समझता हूं समस्या यह नहीं है कि हम बाइबल में दिये गए नियमों को हमारा मार्गदर्शन करने नहीं देते, परन्तु बड़ी समस्या यह है कि लोग कहेंगे, ''कि मैं जानता हूं कि यह आज्ञाएं बाइबल के अनुसार है''

अनुवादक: भाई फ़ैरल

हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग

रैक्स बैक्स

हमें याद दिलवाने के बाद ''पूर्व युग में परमेश्वर ने (इब्रानी) बाप दादाओं से बातें की'' (इब्रानियों 1:1) इब्रानियों की पत्री का लेखक आगे कहता है कि ''इन अंतिम दिनों'' यानी मसीही युग में (परमेश्वर) ने हम से पुत्र के द्वारा बातें की (इब्रानियों 1:2) इस वचन पर टीकाकार हमारा ध्यान (अपने पुत्र के द्वारा अभिव्यक्ति पर ध्यान दिलाते हैं और बताते हैं कि यहां (एन) उपसर्ग के साथ कोई उप पद या उप सर्वनाम नहीं है, जो कि ''पूर्णतया पुत्र का अर्थ देता है'' (ए. टी. रॉबर्टसन) स्पष्टता जोर इस पर है कि नया प्रकाशन नबी से हटकर उसके द्वारा दिया गया है जो पुत्र है। ...प्रकाशन पुत्र-प्रकाशन था'' (एम.आर. विन्सेंट) ''परमेश्वर ने हमारे साथ उसमें होकर बातें की जिसमें यह संभव है यानी वह पुत्र है'' (रिनेकर एण्ड रोजर)।

अब जैसे-जैसे इब्रानियों का लेखक आगे बढ़ता है, वह पुत्र के बारे में सात तथ्य विस्तार से बताता है जो उसकी महानता पर जोर देते हैं और इस प्रकार उसके द्वारा दिए जाने वाले ईश्वरीय प्रकाशन के महत्व पर जोर देता है। पहले परमेश्वर ने अपने पुत्र को ''सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया'' जिसका अर्थ यह है कि यीशु के अधिकार में वह सब है जो पिता के अधिकार में है (प्रेरितों 2:36; यूहन्ना 17:10; 16:15) फिर पुत्र ही तो है ''जिसके द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है'' (गलातियों 1:15-16; यूहन्ना 1:3, 10, 1 कुरिन्थियों 8:6) जो एक निष्क्रिय औजार नहीं बल्कि सहयोग करने वाला करता है (व्हेस्ट)। फिर मसीही व्यक्ति ''(परमेश्वर) की महिमा का प्रकाश'' है जो परमेश्वर की उस जबर्दसत चमक को दिखाता है जिसे देखा नहीं जा सकता (यूहन्ना 1:18) वह ''(परमेश्वर)

के तत्व की छाप'' भी है, ताकि वह अधिकार के साथ दावा कर सके कि ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है ''(यूहन्ना 14:9) मसीह की है जो ''सब वस्तुओं को अपने साथ के वचन से संभालता है।'' वही था जिसने अपनी ही कीमत चुकाकर ''पापों को धो....'' दिया और वही है जो उसके बाद ''ऊंचे स्थानों पर महिमामान के सामने जा बैठा'' ऊंचा किया गया, सर्वश्रेष्ठ किया गया, जिसके पास सारा अधिकार है (इफिसियों 4:10; फिलिप्पियों 2:9. भजन 110; लूका 22:69; मत्ती 28:18; यूहन्ना 17:2)। इसका अर्थ यह हुआ कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के अनुसार उसका, जिसके द्वारा परमेश्वर ने नये नियम के पन्नों में बात की है, स्वभाव और रुतबा यह है।

अब पुत्र के श्रेष्ठ होने की बात ''भविष्यवक्ताओं'' पर लगातार ''मसीह के द्वारा यहोवा के प्रकाशन देने के बारे में क्या पता चलता है? केवल इतना ''क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया (सीने पर्वत पर) (गलातियों 3:19; 5) था और जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला, तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते है'' (जिसकी घोषणा सुसमाचार में पुत्र के द्वारा की गई थी) ''क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न माने का ठीक-ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर क्योंकर बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ'' (इब्रानियों 2:2,3) बेशक ''इसका अर्थ यह हुआ कि इसे हल्के से लेना व्यक्ति को उन से भी भयानक खतरों में डाल देगा जिनसे व्यवस्था की रक्षा होती थी'' (एफ.एफ. ब्रूस) बाद में, इब्रानियों का लेखक कुछ यहूदी मसीहीयों को स्मरण कराता है जो यहूदी मत में लौट जाने के खतरे में है: ''जब कि मूसा कि व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाता है'' (इब्रानियों 10:28, 29) फिर वह यह सवाल करता है कि ''वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया'' (आयत 29) मसीह के विश्वास से हटना यानी अविश्वासी होना कितना गंभीर है-बहुत ही गंभीर! ''सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी देने वाले से मुंह मोड़कर न बच सकें, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी करने वाले से मुंह मोड़कर क्योंकर बच सकेंगे?'' (इब्रानियों 12:25)। बेदीनी यानी मृत्यु। बेशक मसीह को देख पाने की बेहतरीन प्रेरणा प्रेम है। बेशक हमें भय के बजाय कृतज्ञ होना, विश्वासी बनाए रखने वाला होना चाहिए (इब्रानियों 12:28)। परन्तु जब प्रेम की अपील और धन्यबाद की प्रेरणा मन पर असर न करे तो हम यह मत भूलें कि ''हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।'' (इब्रानियों 12:29)।

बाइबल अनुसार आराधना क्या है?

जैरी बेट्स

मसीही लोगों की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक गतिविधि आराधना का कार्य है। आधुनिक आराधना में बहुत से ऐसे कार्य हैं जिन्हें लोगों ने परमेश्वर के वचन के अधिकार के बिना जोड़ लिया है। परन्तु कुलुस्सियों 3:17 में पौलुस लिखता है, ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।'' यीशु के नाम में कुछ करने का अर्थ उसके अधिकार से उसे करना होता है। इसका अर्थ यह है कि यीशु के अनुसार, आराधना जो बाइबल के अधिकार के बिना की गई है वह ''व्यर्थ'' आराधना है (मत्ती 15:9)। इस कारण हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक कि बाइबल के अनुसार आराधना में क्या-क्या होता है और यह यकीनी बनाना आवश्यक है कि हमारी आराधना परमेश्वर को स्वीकार्य हो।

आराधना क्या है?

नये नियम में आमतौर पर जिस शब्द का अनुवाद आराधना के लिये किया जाता है उसका अर्थ श्रद्धा, दण्डवत करना या गहरा सम्मान दिखाना है। यह श्रद्धा का आदर का संकेत देता है। आराधना से संबंधित बेहतरीन आयतें यूहन्ना 4:23, 24 है, ''परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।'' यूहन्ना सच्चे आराधकों की बात करता है, इसका अर्थ यह हुआ कि झूठे आराधक होते हैं। हम परमेश्वर पिता की आराधना करते है। यह घनिष्ठता और प्रेम को दर्शाता है (इफिसियों 1:3, लूका 11:2-4)। परन्तु हम उस श्रद्धा और आदर को न भूलें जिसके परमेश्वर योग्य है। सच्ची आराधना में दो बातें होनी आवश्यक है जिनमें एक तो आत्मा है और दूसरा सच्चाई। आत्मा से भरी आराधना दिल से की गई सच्ची आराधना है और सच्चाई से की गई आराधना करने का अर्थ परमेश्वर की आराधना वैसे ही करनी है जैसे उसका वचन बताता है। यीशु ने कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

इसका अर्थ यह हुआ कि सच्चाई से आराधना करने का अर्थ वैसे आराधना करना है जैसे उसके वचन में बताया गया है। आराधना परमेश्वर को महिमा देने का कार्य है। हमें इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि हम परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं न कि अपने आपकी। एक प्रचारक ने आराधना की परिभाषा ''परमेश्वर को वह मानना जो वह है, अपने आपको वह मानना जो आप हैं और उसी अनुसार प्रतिक्रिया है और इस पाठ में इसका इस्तेमाल आराधना को समझने के आधार के रूप में किया जाएगा। आराधना की सबसे पहली बात यह समझना है कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का और जो कुछ इनमें है, सबका सृष्टिकर्ता है (उत्पत्ति 1:1; कुलुस्सियों 1:16)। वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है (निर्गमन 20:2, 3)ं वह बिल्कुल खरा, धर्मी और सच्चा है (मरकुस 10:18)। यशायाह इसी पहलू

पर जोर देता है जब वह उसे ''इस्राएल का पवित्र'' कहता है। यशायाह परमेश्वर के संबंध में 29 बार ''पवित्र'' शब्द का इस्तेमाल करता है (उदाहरण के लिए यशायाह 1:4; 43:15)। यह बहुत बड़ा विरोधाभास है। वह पवित्र हमारे मध्य में है। ''हे सिय्योन में बसने वाली, तू जय जय कर कर और ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है'' (यशायाह 12:6)।

दूसरा, हम देखते हैं कि हम कौन है। रोमियों 3:10-12 में मनुष्य की दशा को संक्षिपत करने के लिए पौलुस भजन 14:1-3 और भजन 15:1-3 से दोहराता है। ''जैसा लिखा है, 'कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं' ''(रोमियों 3:10-12) अपने विश्वास की बड़ी परीक्षा से गुजरने और निकल जाने के बाद भी अय्यूब कहता है, ''इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूं'' (अय्यूब 42:6)। विश्वासयोग्य नबी यशायाह को जब परमेश्वर की ओर से दर्शन मिला तो उसने यह मान लिया कि वह तो ''अशुद्ध होठों वाला मनुष्य'' है (यशायाह 6:5)। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोगों के सामने हम अपने आपको चाहे भले मनुष्यों के रूप में दिखाते रहें, पर परमेश्वर की दृष्टि में हम पापी ही है। परमेश्वर का मानक सिद्धता है जो कि यकीनन मनुष्य की भलाई के मानव से कहीं बेहतर है। इस प्रकार आराधना में व्यक्ति को अपने पापी होने का और परमेश्वर तक पहुंचने के अयोग्य होने का पता चलता है (लूका 5:8)। यह आराधक के मन में आभार और विनम्रता को बढ़ावा देता है।

तीसरी बात, हमें सही प्रतिक्रिया देनी आवश्यक है। सही जवाब क्या है? हमारे सही जवाब में बहुत सी बातें आ जाती हैं। (1) हम में निर्भतरा और विनम्रता की भावना होनी आवश्यक है। परमेश्वर हम सब का सृष्टिकर्ता है और हम सब उसी में से निकले हैं। (2) हमारा व्यवहार धन्यवाद करने वाला होना चाहिए। बाइबल बार-बार मनुष्य को धन्यवाद करने के लिए प्रोत्साहित करती है ''अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20) (2) हमें आनन्द से भी भरना चाहिए। ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो'' (फिलिप्पियों 4:4)। ''परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए'' (रोमियों 15:13)। हमें उसकी इच्छा को मानते हुए अपने जीवनों का समपर्ण करना आवश्यक है, ''इसलिये हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1) हमें सही ढंग से प्रार्थना करना ही काफी नहीं है बल्कि इससे हमारा जीवन भी पवित्र होना आवश्यक है। हम अपनी आराधना को जीने के अपने ढंग से अलग नहीं कर सकते। यदि हमारी आराधना के साथ हमारा जीवन पवित्र नहीं है तो परमेश्वर हमारी आराध ना से नफरत करेगा। ''मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और उन्हें निकम्मा जानता हूं और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं। चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि

चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न होऊंगा और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकूंगा'' (आमोस 5:21, 22)। आमोस के समय में समस्या यह नहीं थी कि इस्राएली लोग आराधना गलत ढंग से कर रहे थे बल्कि उनकी आराधना से उनका जीवन पवित्र नहीं हो रहा था जिससे परमेश्वर ने उनकी आराधना को स्वीकार करने से इंकार कर दिया।

आराधना के उद्देश्य

बाइबल बताती है कि आराधना के कई उद्देश्य होते हैं। बेशक मुख्य उद्देश्य परमेश्वर को महिमा देना ही है, ''सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31)। स्तुति और महिमा के योग्य केवल परमेश्वर है। हम जो कुछ भी करते है उससे यह पता चलना चाहिए कि परमेश्वर हमारे भीतर है और आराधना में इसे दिखाने से बेहतर कोई ढंग नहीं है। इफिसियों के नाम पत्र में पौलुस ने प्रार्थना की, ''कलीसिया में और मसीह यीशु में उस (परमेश्वर) की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे'' (इफिसियों 3:21)।

दूसरा उद्देश्य साथ के मसीही लोगों को सुधारना है। ''और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो'' (इब्रानियों 10:25) फिर से यह इक्ट्ठा होने के महत्व पर जोर देता है क्योंकि बिना किसी शक के बिना इकट्ठा हुए हम एक दूसरे को कभी प्रोत्साहित नहीं कर सकते। 1 कुरिन्थियों 14:26 में पौलुस ने कुरिन्थयों से भी कहा था कि सब बातें सुधार के लिए की जाएं। 1 कुरिन्थियों 14 में ''उन्नति'' या ''सिखाने'' के लिए शब्दों का इस्तेमाल सात बार हुआ है। पौलुस आत्मिक दानों सहित आराधना में पाई जाने वाली बुराइयों को सुधार रहा था। क्योंकि सुधार के लिए निर्देश और स्पष्ट भाषा का होना आवश्यक हैं। तौभी हम देखते हैं कि मुख्य उद्देश्यों में से एक साथी मसीहियों को सुधारना है।

आराधना का एक और उद्देश्य मसीह की देह के रूप में या अपने उद्धार और अपनी एकता को लेकर अभिनन्दन करना प्रचार करना है। ''वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? इसलिए, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत है, एक देह है, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।'' (1 कुरिन्थियों 10:16, 17) अगले अध्याय में पौलुस जब प्रभु भोज में पाई जाने वाली खामियों में सुधार कर रहा था तो आयत 26 में उसने लिखा ''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो'' (1 कुरिन्थियों 11:26)। इसी प्रकार जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं, तो हम साथी मसीहियों को एक दूसरे के उद्धार और उस एकता को स्मरण दिलाने के साथ-साथ जो मसीही की देह के अंगों के रूप में हमें मिली है, किसी भी गैर मसीही को जो आराधना में भाग ले रहा हो, प्रचार करते हैं या उसे सिखाते हैं। ✞